: तृतीय अध्याय :

हिमांशु जोशी के 'अरण्य' उपन्यास में आँचलिकता

: तृतीय अध्याय :

'हिमांशु जोशी के 'अरण्य' उपन्यास में आँचलिकता'

प्रस्तावना

3.1 कथानक का आँचलिक आधार-क्षेत्र विशेष।

3.1.1 भौगोलिकता।

3.2 आँचलिक पात्र।

3.3 भाषा, संवाद, शैली और मुहावरों में आँचलिक स्पर्श।

3.3.1 आँचलिक भाषा का प्रयोग।

3.3.2 कहावतें, मुहावरें, लोकोक्तियों का प्रयोग।

3.3.3 कथोपकथन।

3.3.4 प्रकृति का काव्यात्मक वर्णन।

3.3.5 अपशब्दों का प्रयोग।

3.4 आँचलिक वातावरण या क्षेत्र-विशेष की पृष्ठभूमि ।

3.4.1 राजनीतिक पृष्ठभूमि।

3.4.2 सामाजिक पृष्ठभूमि।

3.4.3 धार्मिक पृष्ठभूमि।

3.4.4 आर्थिक पृष्ठभूमि।

3.5 'अरण्य' उपन्यास में लोकसंस्कृति।

3.5.1 परंपरा।

3.5.2 रीति।

3.5.3 त्यौहार।

3.5.4 मेलें।

3.6 युगीन चेतना की अभिव्यक्ति।

3.7 प्राकृतिक स्थिति के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का चित्रण।

3.7.1 वर्ग तथा जाति भावना।

3.7.2 अज्ञान / अशिक्षा समस्या।

3.7.3 अन्याय / अत्याचार।

3.7.4 स्वार्थी प्रवृत्ति।

3.7.5 व्यसनाधीनता की समस्या।

3.7.6 विवाह समस्या।

3.7.6.1 विधवा विवाह समस्या।

3.7.6.2 अनमेल विवाह समस्या।

3.7.6.3 बहु विवाह समस्या।

3.7.6.4 दहेज समस्या।

3.7.6.5 अंतर्जातीय विवाह समस्या।

3.8 परिवार विघटन की समस्या।

निष्कर्ष

प्रस्तावना :-

आँचलिकता क्या है, अंचल किसे कहते हैं, आँचलिकता के अंतर्गत क्या-क्या आता है, इन सभी बातों पर हम चर्चा कर ही चुके हैं। इन सभी के आधार पर आँचलिकता की परिभाषा भी बना दी गई है। आँचलिक उपन्यासकार आँचलिक जीवन के रीति-रिवाज़, रहन-सहन, विश्वास, लोककला, संस्कृति आदि के स्वाभाविक चित्रण के लिए आँचलिक भाषा का प्रयोग करता है। इन बातों के आधार पर डॉ.मृत्युंजय उपाध्याय जी द्वारा बतायी गई आँचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ अत्यंत सार्थ प्रतीत होती हैं।

''आँचलिक उपन्यासों की समग्रता, संपूर्णता में भावन करने के लिए भाषिक पृष्ठभूमि की महती की आवश्यकता है। विशेष कर आँचलिक भाषा और लोकभाषा का वहाँ प्राधान्य है। कारण, जिस आँचल की पृष्ठभूमि पर जो आँचलिक उपन्यास विरचित है, उनमें अंचल विशेष की लोकसंस्कृति आयेगी ही और लोकसंस्कृति का प्रतिबिंबन लोकभाषा के प्रयोग के अभाव में नहीं हो सकेगा।''[1]

जहाँ एक ओर डॉ.मृत्युंजय उपाध्याय जी लोकभाषा के प्रयोग को महत्त्व देते हैं वही सहदेव कांबले जी 'अंचल' शब्द को इस प्रकार परिभाषित करते हैं।

'' 'अंचल' शब्द से आँचलिकता विशेषण बनता है। पाणिनीय सूत्र के अनुसार इसका अर्थ होता है कि किसी देश या प्रांत भाग से संबंधित वस्तु विशेष। इस प्रकार आँचलिक का अर्थ हुआ अंचल (देश के प्रांत भाग) से संबंधित कोई भी विशेष भाग जिसकी अपनी संस्कृति हो, अपनी एक अलग किस्म की बोलचाल की भाषा हो, अपनी समस्याएँ हो, संक्षेप में सामान्य देश भी, जहाँ किसी विशिष्टता का आभास हो, अंचल कहा जा सकता है।''[2]

सहदेव कांबले जी ने अंचल की भाषा के साथ-साथ उसकी समस्याएँ और उसकी प्रादेशिक विशिष्टता को महत्त्व दिया है।

हिंदी साहित्य में आँचलिक उपन्यासों की परंपरा काफ़ी लंबे अर्से से चल रही है। इन सभी उपन्यासों की अपनी एक अलग विशेषता है कि इन सभी में उस प्रदेश-विशेष को नायकत्व दिया है, जिनसे इनका कथानक जुड़ा हुआ है। हिंदी साहित्य में आधुनिक काल में हिमांशु जोशी जी एक ऐसे प्रतिभाशाली

उपन्यासकार हैं, जिनके उपन्यासों में से 'अरण्य' उपन्यास एक अलग ही आँचलिक पृष्ठभूमि को लेकर लिखी गई कृति है। बर्फिली पहाड़ियों के अंचल में होनेवाले 'कनाली' गाँव का इसमें वर्णन मिलता है। पूरी तरह से आँचलिक जीवन का चित्रण करनेवाले इस उपन्यास का विश्लेषण आँचलिकता के तत्त्वों के अनुसार करेंगे। उपन्यास की आँचलिकता निम्नलिखित विद्वानों के विभिन्न तत्त्वों पर परखेंगे।

(1) डॉ.मृत्युंजय उपाध्याय जी ने निम्नांकित तत्त्व माने हैं -

> ''(1) प्राकृतिक विशेषताओं का अंकन।
>
> (2) सामाजिक विशेषताओं का अंकन।
>
> (3) प्राकृतिक एवं सामाजिक विशेषताओं द्वारा निर्मित भौगोलिक एवं सामाजिक वातावरण का चित्रण।''[3]

(2) डॉ.रामसागर त्रिपाठी और गुप्त ने अपने 'बृहद् हिंदी निबंध कोश' में आँचलिक उपन्यासों के निम्नलिखित मूल तत्त्व माने हैं -

> '' (1) भौगोलिक स्थिति का अंकन और वहाँ की प्रकृति का काव्यमय चित्रण।
>
> (2) कथानक का आँचलिक आधार।
>
> (3) लोकसंस्कृति का चित्रण।
>
> (4) वहाँ की राजनीतिक चेतना, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति का चित्रण।
>
> (5) जन-जागरण की नई चेतना।''[4]

(3) राजनाथ शर्मा जी ने 'साहित्यिक निबंध' में आँचलिक उपन्यासों के निम्नलिखित मूल तत्त्व निर्धारित किए हैं -

> '' (1) किसी अंचल-विशेष की प्राकृतिक स्थिति एवं सुषमा का अंकन।

(2) कथानक का आधार वहीं अंचल-विशेष, जिसमें स्थानीय लोककथाओं का समावेश।

(3) स्थानीय लोकसंस्कृति का वैविध्यपूर्ण और विस्तृत चित्रण।

(4) सभी प्रकार की स्थितियों का पूर्ण चित्रण।

(5) उस अंचल में उठती नवीन जन-चेतना का दृष्टिकोण का संकीर्णता से रहित प्रभावपूर्ण अंकन।

(6) स्थानीय बोली का संतुलित एवं स्वाभाविक प्रयोग।''[5]

(4) डॉ.हरिशंकर दूबे जी ने निम्नांकित तत्त्व बताए हैं, -

(1) क्षेत्र-विशेष के कथानक का आधार।

(2) क्षेत्र-विशेष की भौगोलिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं का समग्र चित्रण।

(3) भाषागत वैशिष्टय और स्थानीय मुहावरें।

(4) लोकसंस्कृति।

(5) युगीन चेतना की अभिव्यक्ति।

(6) आँचलिक पात्र।''[6]

डॉ.हरिशंकर दूबे जी द्वारा बताए गए तत्त्व उपन्यास तत्त्व के पारंपारिक क्रमानुसार नहीं हैं। उन्हीं क्रम के आधार पर हम निम्नलिखित तत्त्वों के अनुसार 'अरण्य' उपन्यास में आँचलिकता की परख करना चाहते हैं। उपर्युक्त तत्त्वों का आधार लेकर अनुसंधाता को निम्नांकित तत्त्व उचित लगते हैं, जिससे सही आँचलिकता का पता चलेगा।

(1) कथानक का आँचलिक आधार क्षेत्र-विशेष।

(2) आँचलिक पात्र।

(3) भाषा, संवाद, शैली और मुहावरों में आँचलिक स्पर्श।

(4) आँचलिक वातावरण या क्षेत्र-विशेष की पृष्ठभूमि।

(5) उपन्यास में लोकसंस्कृति।

(6) युगीन चेतना की अभिव्यक्ति।

(7) प्राकृतिक स्थिति के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का चित्रण, आदि तत्त्वों के आधार पर 'अरण्य' उपन्यास का विवेचन प्रस्तुत किया जाएगा। इनके आधार पर इस उपन्यास की आँचलिकता सिद्ध हो जाएगी। यह पूरा उपन्यास एक बर्फिली पहाड़ियों के बीच रहनेवाले छोटे से गाँव जन-जीवन के ऐसे चित्र प्रस्तुत करता है कि वर्णन पढ़कर रोंगटें खड़े हो जाते हैं। प्रकृति का अपार सौंदर्य होते हुए भी जिन समस्याओं का अंकन हिमांशु जोशी जी ने किया है, वह सहृदयी के हृदय को छू जानेवाला है। उन्होंने स्वयं भी 'आरंभ में' के अंतर्गत इन पहाड़ी लोगों के जीवन पर प्रकाश डाला हैं -

''पहाड़ के लोगों की जिंदगी, पहाड़-सी होती है, कठिन। गत कई दशाब्दियों से लधिया, पनार, कालिगंगा, या लोहावती से इतना जल प्रवाहित हो जाने के पश्चात् भी लगता नहीं, उनके जीवन का सारा अभिशाप, सारा कलुश धुल पाया है। गरीब आदमी आज भी गरीब है। जो पहले शोषित थे, आज भी उनका शोषण दूसरी तरह से हो रहा है। उनके लिए आज भी यंत्रणा और यात्रा की परिभाषा वही है जो तब थी, अतीत में। अभाव और अन्याय की चक्की के दुहरे पाटों में वे आज भी उसी तरह पिस रहे हैं। दुनिया में इतनी प्रगति, इतनी चकाचौंध के पश्चात् भी ये मानव-बस्तियाँ इतनी धुँधली, इतनी अँधियारी, इतनी ठण्डी, इतनी बुझी-बुझी-सी क्यों लगती हैं?''[7]

इस प्रकार का जीवन जीनेवाले इन लोगों में सिर्फ जीवन की आशा ही उन्हें जीवित रखती है। जोशी जी ने इसके माध्यम से एक और भारत की दशा का वर्णन किया है।

3.1 कथानक का आँचलिक आधार-क्षेत्र-विशेष :-

जीवन और प्रकृति का गहरा संबंध अंचल से होता है। इसमें अंचल की विविधता, कुमाँचल तथा पहाड़ी अंचल परिलक्षित है। हिमांशु जोशी जी की वर्णन शक्ति इतनी सजीव है कि कथावर्णन और प्रसंगों का उचित चयन विस्तार से प्राप्त होता है। आने-जाने के मार्ग, संपर्क में आनेवाले पात्र, विविध स्थलों का सूक्ष्मता से वर्णन किया है। अंचल की नारी जीवन समस्या, अंतर्विरोध, प्रत्येक पात्र का स्वतंत्र व्यक्तित्व, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक विशेषता आदि बातों का कथानक के विस्तार के कारण कथानक में अनेक स्थलों पर हृदयग्राही, मर्मस्पर्शी, संवेदनात्मक स्थलों का समावेश अच्छे ढंग से किया है। वहीं कथानक के आधार हैं। आँचलिकता में उसकी सीमा तथा वास्तविक रूप का ही विवरण होता है। आँचलिक उपन्यास का आधार लोकजीवन होता है। आम तौर पर आँचलिक उपन्यासों में 'अंचल' को नायकत्त्व दिया जाता है। इसी कारण यहाँ अलग नायक नहीं होता। प्रमुख पात्र तो होता है लेकिन वह भी प्रतिनिधि रूप में ही आता है। इसी कारण इन उपन्यासों के कथानक का आधार वह क्षेत्र-विशेष के जीवन को उसमें अंकित किया जाता है, उसे केंद्र में रखा जाता है। [illegible] कथानक उसी के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। उसी क्षेत्र-विशेष की भौगोलिकता को देखना अनिवार्य है।

3.1.1 भौगोलिकता -

हिमांशु जोशी के 'अरण्य' उपन्यास में वर्णित अंचल 'कनाली' गाँव का है। अल्मोड़ा जानेवाली सरकारी बड़ी सडक से बारह-चौदह मील दूर या निकट के डाकखाने 'खेतीखान' से अठ्ठारह-बीस मील दूर पहाड़ों के बीच बसा हुआ यह गाँव है। पहाड़ों से घिरे रहने के कारण यह गाँव अकेला उपेक्षित और सुनसान है। बर्फिली चोटियों और चीड़ तथा देवदार के बनों से घिरा यह गाँव है। इस गाँव के पश्चिम-दक्षिण की ओर आबादी अधिक है। घाटियों में गूलों की सहायता से धान उगाया जाता है। कभी-कभी 'लुधिया' नदी में मछली पकड़ने का काम भी चलता है। यह नदी लधिया की शाखा है, जो आगे चलकर काली-गंगा और भारत-नेपाल की सीमा काटने पर 'शारदा' नदी के नाम से पहचानी जाती है। इन पहाड़ों से गुजरनेवाली इस नदी ने प्रकृति की उदारता का एक सुंदर रूप दिखा दिया है। जहाँ गन्ने के मोटे-मोटे पौधे उग आते हैं। हरी-भरी धान की लहलहाती फसल उग आती है और सबसे मीठी हैंसालू मछली भी यहाँ पायी जाती है, परंतु जहाँ एक ओर प्रकृति इतनी उदार है उतनी कंजूस भी है। पहाड़ों पर यह स्थिति है लेकिन पहाड़ों के

बीच या दूसरी ओर उतना ही सूखा और सूना वातावरण है।

इस प्रदेश में जो घर हैं वे अव्यवस्थित अलग-अलग बिखरें हैं। इस विरान-सी बस्ती में कुल पच्चीस-तीस परिवार रहते हैं। अधिकतर ब्राह्मण यहाँ रहते हैं। इनकी वेशभूषा इस प्रकार से हैं - काली मैली धोती घूटनों तक बाँधी, मोटा छह पलडिया जनेऊ, जो कभी हल्दी के पीले रंग में डूब चूकने के बाद, गली के पसीने और मैल से सदा स्याह रहता है। सिर पर एक लपकती छोटी-सी टोपी जो गाय के खुर के बराबर होती है। गोल-गोल लाल रंग का टीका, लंबा-चौड़ा चंदन ये सारी विशेषताएँ इन गाँववालों की हैं।

इस गाँव के लोग पहले जजमानी करते थे। परंतु बाद में धीरे-धीरे ये खेती करने लगे और बाद में तो इस सूखी धरती पर पसीना बहाने से थके और हार गए। कुछ लोग तो इस धरती से इतने थक गए कि उन्होंने जंगलों में आग लगा दी। फिर कुछेक लोग तो चाय का ढ़ाबा चलाने लगे परंतु ग्राहक न होने के कारण वह व्यवसाय भी चल नहीं पाया। कुछेक अन्य कार्य करने लगे परंतु कुछेक कुछ भी काम नहीं करते थे। इन लोगों के घर की औरतें काम करती और ये बैठे-ठाले ताश खेलते। कुछ ने अभी-भी अपनी पंडिताई नहीं छोड़ी।

गाँव में जब हरेला का मेला आता है तब गाँव आर्थिक विपन्नता के बावजूद भी उसका स्वागत करता है। तब प्रकृति भी बहुत सुंदर रूप धारण करती है। हिमांशु जोशी जी लिखते हैं -

''अब के फिर हरेला का मेला आया। नयी बरखा की नयी बौछारों के साथ एक नया हरा स्वर्ग पहाड़ों की रूपहली धरती पर छिटक गया। सारी तपन, सारी उमस जैसे कुछ ही झोंकों में धुल-पुंछ गयी।''[8]

अर्थात् प्रकृति ने अपना मनोरम रूप धारण किया। दिन के उगते ही घनी घाटियों की ओर सूरज की पीली-पीली सर्द किरन चंचलता से आँख-मिचौनी करने लगी। पौ फटने से पहले पड़ी छिंटों के कारण हवा में नमी होने के बावजूद सभी तैयार हो जाते हैं।

जब इस प्रदेश में बर्फ पड़ती है तो इस गाँव पर इसका क्या असर होता है, इसका अत्यंत यथार्थ अंकन तो हिमांशु जोशी जी ने किया है परंतु उस प्राकृतिक सुंदर दृश्य को भी उन्होंने अंकित किया है।

वे लिखते हैं -

"गांव सोया था। मिट्टी के घरौंदे सोये थे। धरती सोयी थी। बर्फ की मोटी-मोटी अथाह लंबी चादरों से लिपटी, गहरी निद्रा में । पूस का महीना शुरू हुआ ही था कि हिम की फुहारों में तेजी आ गयी। जहां तक दृष्टि जाती, बर्फ ही बर्फ दीखती। पेड़-पहाड़ खेत-खलिहान, नदी-नाले सब पर सफेदी पुत आयी। सांझ को बर्फीली आंधी चलती तो सारी धरती ठंड से कांप-कांप उठती।"[9]

इस प्रकार उस प्रदेश का ही नहीं वहाँ के प्राकृतिक वातावरण और उसके असर को भी हिमांशु जोशी जी ने अंकित किया है। उपन्यास की नायिका कावेरी जब अपने घर रहने चली जाती है तो वहाँ पर उसका अपना घर, जो अब खंडहर बन चुका है, का भी वर्णन हिमांशु जोशी जी ने अत्यंत यथार्थ रूप से किया है। छत के पत्थर खो चुके हैं, सीढ़ियों के पत्थर नीचे झूल रहे थे, दीवारों पर हरी-हरी काई लग गयी थी। घास जम गयी थी। छिपकलियों ने उसे अपना ड़ेरा बना दिया था। दीवारों में मकड़ी के जालें, आंगन में सिसुड़े के पौधे, कमर-कमर तक घास यह वर्णन पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

अत: स्थान विशेष के लोगों की वेशभूषा, रहन-सहन आदि का ही चित्रण कर हिमांशु जोशी रूके नहीं हैं तो उन्होंने उस प्रदेश का प्राकृतिक वातावरण समय-समय पर किस प्रकार परिवर्तित हुआ, इसका भी चित्रण किया है। इस पूरे अंचल के जन-जीवन को उजागर करना यही एक मात्र उद्देश्य होने के कारण क्षेत्र-विशेष ही इसके कथानक का आधार रहा है।

3.2 आँचलिक पात्र :-

इस उपन्यास में आए लगभग सभी पात्र पहाड़ी प्रदेशों से जूड़ी रूढ़ि-परंपरा के द्योतक है। कावेरी, माधव पधान, पुरूषोत्तम, रूखलि, सुकिया, पधानी, ठेकेदार, चिठ्ठीरसैन, हिरदैराम, बिस्सू, हरसू, बंशी, पटवारी, पेशकार, तहसील, कुँवरदेव, पुलिस, दीना, मानिक, आनदेव, गुमानी थोकदार, सटवारी, नौकर-बिसना, कृपाल, मंती, रघ्घू, नीली, सुनिया, एक बुढ़िया और पं.हिरदैराम की पत्नी आदि सभी पात्र अपनी-अपनी अलग विशेषताएँ लेकर आते हैं और ऐसे लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो इस प्रदेश में

सदियों से रहते आए हैं। सदियों से अन्याय-अत्याचार सह रहे हैं। सदियों से अज्ञान के अंधकार से घिर गए हैं। ये पात्र कभी अपनी परिस्थिति का अंकन नहीं करते क्योंकि इनके पास सोचने के लिए वक्त नहीं हैं। कावेरी, पधान आदि पात्रों पर आनेवाले संकट ही उन्हें उन संकटों से जूझने की शक्ति देते हैं। निरंतर आतंक की घनी छाया में रहने के कारण ये पात्र अपने दबे व्यक्तित्व को लेकर साकार होते हैं। उपन्यास में अंकित जीवन को वे स्वयं जीते हैं। मानिक, कावेरी तथा पधान आदि पात्रों का चरित्र आकर्षक बन पड़ा है तथा ये पात्र आँचलिक जीवन में व्याप्त प्रवृत्तियाँ एवं विषमताओं का उद्‌घाटन करने में सहायक हैं। इस उपन्यास में विभिन्न पात्र मिलते हैं, जैसे -

(1) नायक - मानिक।

(2) नायिका - कावेरी।

(3) खलनायक - पुरूषोत्तम और दीना।

(4) सच्चाई का साथ देनेवाला - माधव पधान।

(5) सामाजिक कुप्रथाओं के विरूद्‌ध विद्रोह करनेवाले - मानिक, कावेरी और माधव पधान।

(6) संतान के लिए बहुविवाह करनेवाला पात्र - ठेकेदार, आदि।

3.3 भाषा, संवाद, शैली और मुहावरों में आँचलिक स्पर्श :-

आँचलिक उपन्यास के लिए भाषा सबसे महत्त्वपूर्ण साधन होता है। इसी आँचलिक भाषा के जरिए लेखक प्रभाव जमा सकता है। आँचलिक भाषा का प्रयोग होते हुए भी वह अगर सीधी, सरल, प्रभावपूर्ण, आँचलिक मुहावरों और लोकोक्तियों से युक्त काव्यमयी हो तो उसका प्रभाव पाठकों के मन पर काफ़ी देर तक अंकित रहता है। भाषा में स्थानीय रंग गहनता से उपलब्ध होता है। स्थानीय रंग का मतलब है -

''किसी कथात्मक रचना में जब कथावस्तु की पृष्ठभूमि के विषय में भरपूर सूचना दी जाती है और वहाँ के वातावरण का निदर्शन स्थानगत भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों की समष्टि के रूप में प्रस्तुत की जाती है, तब उसे स्थानीय रंग देना कहते हैं।''[10]

हिमांशु जोशी जी ने 'कनाली' गाँव के विभिन्न वर्ग के व्यक्तियों का चित्रण किया है भाषा भी उसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। 'अरण्य' उपन्यास में आँचलिक जीवन को वैशिष्ट्यपूर्ण बनाने के लिए जोशी जी ने सजग भाषा का प्रयोग किया है। वहाँ के जीवन को जीवंतता और उसकी मूल सहजता के साथ अंकित करने के लिए भाषा ही उपयुक्त बन पड़ी है। हिमांशु जोशी जी ने 'अरण्य' उपन्यास में इसी प्रकार की आँचलिक भाषा का प्रयोग किया है जिसमें न सिर्फ आँचलिकता है बल्कि संक्षिप्तता, काव्यात्मकता, सरलता आदि गुण भी मौजूद हैं। उन्होंने आँचलिक शब्दों की भरमार की हैं। भाषा के सरल प्रयोग के कारण ही उपन्यास की आँचलिकता उजागर हो पाने में मदद हो चुकी है।

3.3.1 आँचलिक भाषा का प्रयोग -

पूरे उपन्यास में हिमांशु जोशी जी ने आँचलिक भाषा का प्रयोग किया है जिसमें सबसे पहले आँचलिक शब्द आते हैं। शब्दों में भी विभिन्न प्रकार के शब्द मिलते हैं, जैसे -

(1) <u>आँचलिक शब्द</u> - सराद, हत्ता, बामन, मरजी, परमेसर, हरफ, गिराम, छिन, ददुदा, बरसफल, करतब, पुत्र, सोहबत, घन्न, परान, जनम, करज, कसट, ऐसान, मैके, गते, मरद, उमर, धरम, साब, छिमा, कलेश, मूरख, मंतर, हौलात, बजरपात, जमराज, शूली, बर्बाद, फरज, खरचा, आसिस, बनोबस्त, आतमघात, झेल, सुभाव, छनचर आदि।

(2) <u>'कर' प्रत्यय लगाकर आए शब्द</u> - पटक-पटककर, टिका-टिकाकर, उतार-उतारकर, नचा-नचाकर, चौंक-चौंककर, बैठ-बैठकर, काट-काटकर, खिला-खिलाकर, मटका-मटकाकर, फैला-फैलाकर आदि।

(3) <u>जुड़े शब्द</u> - नामी-धामी, राशन-पानी, उलटना-पलटना, तीरथ-बरत, जप-ध्यान, तोड़-मरोड़, कूटता-पीटता, टेढ़े-मेढ़े, मुड़ा-तुड़ा, पैसे-पाई, नपा-तुला, भाँड़े-बरतन, रकम-कलम, पास-पड़ोस आदि।

(4) <u>द्विरूक्ति शब्द</u> - चलते-चलते, ताजे-ताजे, बम-बम, हर-हर, थुर-थुर, बार-बार, क्या-क्या, ज्यों-ज्यों, जोर-जोर, पीली-पीली, देखते-देखते, गाते-गाते, ऊँचे-ऊँचे, टप-टप, गोड़ते-गोड़ते, अपने-अपने आदि।

इस प्रकार शब्दों के प्रकार मिलने पर भी और एक प्रकार इसमें सम्मिलित है, जैसे - खुली-की-खुली, थमी-की-थमी, बैठे-के-बैठे, होना-न-होना, अंदर-ही-अंदर आदि। इस प्रकार जोशी जी ने

आँचलिक भाषा का प्रयोग अधिक मात्रा में किया है।

3.3.2 कहावतें, मुहावरें और लोकोक्तियों का प्रयोग -

हिमांशु जोशी जी ने पूरे उपन्यास में पहाड़ी अंचल में रूढ़ कहावतें, मुहावरें और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है, जैसे - सोने की नाक गोबर से लीप दी, बांस की खूंट पर बांस होना, छक्के छुड़ाना, पापी-पाप की सजा भुगतेगा, अकरमी को अकरम का फल मिलेगा, उल्टा चोर कोतवाल ड़ाँटे, एक चोरी - उस पर सीना जोरी, पछाड़ खाकर गिरना, गुड़-गोबर हो जाना, दीन-दुनिया की सुध न रहना, इधर गऊ - उधर गंगा, किनारा कर जाना, इधर कुआँ - उधर खाँई, तीन तेरह बजना, नौ-दो-ग्यारह होना आदि।

3.3.3 कथोपकथन -

कथोपकथन या संवाद भी आँचलिक उपन्यासों का महत्त्वपूर्ण अंग है। उसमें अनेक उद्‌देश्य रहते हैं। घटनाओं में सजीवता लाने हेतु तथा कथानक का विकास करने के लिए वे उपयुक्त होते हैं। साथ-साथ पात्रों के गुणों का उद्घाटन भी करने में सहायक होते हैं। 'अरण्य' उपन्यास के कथोपकथन या संवादों में पात्रानुकूलता, मनोवैज्ञानिकता तथा स्वाभाविकता आदि विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। अपनी भाषा को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए जोशी जी ने संक्षिप्त संवादों का प्रयोग भी किया है, जैसे -

''देवदार के सरकारी जंगल से पेड़ पधान ने काटे थे?'

'काटे थे !'

'तुमने अपनीआंखों से देखा था?'

हां, देखा था।'

'फिर चोरी-छिपे बेचे थे?'

'हां!'

'रूपए रखते हुए तुमने खुद देखा?' दूसरे से प्रश्न पूछा जाता।

'हां!'

'कितने नोट थे?'

'काफी थे। इत्ते-इत्ते!'

'किस रंग के थे?'

'हरे-हरे!''[11]

(2) <u>भावानुकूल कथोपकथन</u> -

''सिर पर उस्तरा फिरवाकर लौटे पुरुषोत्तम का ने कहा, 'अरी खड़्योंनी रोती क्यों है! तेरे लिए तो अभी हम मरे नहीं! भरा-पूरा घर-बार है! फिर यों रो-रोकर बिना बात बावली हुई जाती है! अरी बजरपात तो कोरे आकाश से आज हम पर हुआ। घर की दानी-सियानी चली गई। बोज्यू की ही नहीं, मां की भी जगह रीती हो चली...''[12]

(3) <u>पात्रानुकूल कथोपकथन</u> - देवदार वृक्ष की चोरी के इल्जाम में पकड़े निरीह माधव पधान और जज में हुई बातचीत इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है -

''तुम्हारा कोई वकील है?'

'नहीं!'

'क्यों?'

चुप!

'तुम्हारा कोई गवाह है?'

'नहीं!'

'इनमें तुम्हारा कोई दुश्मन है?'

'नहीं!'

'अपने बचाव में कुछ कहना चाहते हो?'

'मैं क्या कहूं। जो कहना था कह दिया... हुजूर!''[13]

3.3.4 प्रकृति का काव्यात्मक वर्णन -

पहाड़ी अंचल का वर्णन करने से हिमांशु जोशी जी की भाषा में कहीं-कहीं काव्यात्मकता भी उभर आयी है, जैसे -

''समय पावों पर पंख बाँधे उड़ता रहा। उड़ता रहा। दिन, महीने, बरस! बरस पर बरस!''[14]

''उसके सीने पर कावेरी निढ़ाल ढुलक पड़ी। आँखों का रूका बाँध टूटकर तेजी से छलकता-छटपटाता वह निकला, जिसमें मानिक डूब गया। कावेरी डूब गयी। सारा अग-जग; सारा ब्रह्मांढ डूब गया।''[15]

इस काव्यात्मकता के कारण जोशी जी की भाषा में निखार आया है। इसके साथ-साथ अलंकार को भी उन्होंने छोड़ा नहीं हैं। उपमा अलंकार का एक उदाहरण दृष्टव्य है -

''कुँवरदेव के प्राण मछली की तरह छटपटाने लगे।''[16]

3.3.5 अपशब्दों का प्रयोग -

आँचलिक चित्रण के अंतर्गत उस प्रदेश विशेष की गालियाँ भी आयी है। इनमें से कई गालियों को जोशी जी ने अंकित किया है। जैसे - खाडखोस्नि, कलमुखी, चुडैल, कुमाखी, चुहिया, कायर, अठयाड़, कसाई, कमीने, शुद्र, आदमखोर, जार-जात आदि।

इस प्रकार हम इस उपन्यास में देखते हैं कि भाषा सौंदर्य के लगभग सभी उपकरणों का प्रयोग करके हिमांशु जोशी जी ने आँचलिकता को यथेष्ट रूप में प्रस्तुत किया है।

3.4 आँचलिक वातावरण या क्षेत्र-विशेष की पृष्ठभूमि :-

आँचलिक उपन्यासों का सर्वप्रमुख अंग देशकाल वातावरण है। 'अरण्य' उपन्यास में जिस मानव समाज की कथा कही है, वह अल्मोड़ा जिले के 'कनाली' गाँव के वातावरण से संबंधित है। उसमें भोगौलिक एवं प्राकृतिक परिवेश के साथ-साथ राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि वातावरणों का वर्णन सर्वाधिक सहायक है। पहाड़ी और कुर्माजीवन की विविध पृष्ठभूमियाँ इसमें सम्मिलित हैं। आँचलिक उपन्यास की प्रमुख विशेषता यह होती है कि उस क्षेत्र के अंतर्गत आयी पृष्ठभूमि का वर्णन करना। इसके अंतर्गत निम्नांकित पृष्ठभूमियाँ आती हैं -

(1) राजनीतिक पृष्ठभूमि।

(2) सामाजिक पृष्ठभूमि।

(3) धार्मिक पृष्ठभूमि।

(4) आर्थिक पृष्ठभूमि।

ये सभी पृष्ठभूमियाँ उस अंचल के युग जीवन के हर एक पहलू को प्रस्तुत कर देती है।

3.4.1 राजनीतिक पृष्ठभूमि -

राजनीति का भ्रष्ट वातावरण आज सभी जानते हैं। 'राजनीति' शब्द को लगभग भ्रष्टाचार के पर्याय के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। राजनीतिज्ञों को भी उस उच्च, गरिमामयी दृष्टि से नहीं देखा जाता, जिस निगाह से स्वाधीनता से पहले देखा जाता था। राजनीतिज्ञों ने अपने भ्रष्ट आचरण से इस समाज को पूरी तरह से खोखला कर दिया है। राजनीतिज्ञ जब एक बार चुनाव जीत लेते हैं तो दुबारा मुड़कर जनता की ओर देखते भी नहीं है। आश्वासनों को पूरा करना तो दूर की बात है। जो योजनाएँ सरकार द्वारा घोषित हो जाती हैं, वह जनता तक पहुँच ही नहीं पाती, क्योंकि बीच के लोग ही उसे हड़प कर जाते हैं। इसी कारण

इन योजनाओं का लाभ सामान्य जनता को नहीं मिल पाता। इसी प्रकार की स्थिति को हिमांशु जोशी जी ने अपने उपन्यास में अंकित किया है।

''जिला - बोर्ड की योजना थी - गाँवों को शहरों से मिलाने की। उन्हें मिलाने का ठेका लिया था, ठेकेदार या जमादार ने। मजदूर तो यों ही खुश्क आठ-दस आने रोज पर हड्डियाँ तोड़ा करते। इससे अधिक उनकी इज्जत भी क्या थी ! मानिक दो-ढ़ाई महीने तक काम करता रहा। पर अंत में पैसे के बदले ठेंगा दीखा तो खिन्न होकर पोटली थामें, वहाँ से भाग खड़ा हुआ।''[17]

अर्थात् चाहे योजनाएँ बतायी जाती हो, परंतु उस पर अंमल करने का अधिकार जिन्हें प्राप्त हुआ है, ऐसे लोग इन योजनाओं का पैसा हड़प कर जाते हैं और मजदूरों आदि का शोषण करते हैं।

इस प्रकार गाँव में होनेवाली पंचायत का भी चित्रण हिमांशु जोशी जी ने किया है। पंचायत द्वारा लिए जानेवाले निर्णय सभी को स्वीकार करना ही पड़ता है। इस बात का फायदा गाँव के पंच भी उठाते हैं। गाँव के पंच अपना स्वार्थ भी कभी-कभी साध लेते हैं। 'कनाली' गाँव के पंच पुरुषोत्तम भी इसी प्रकार के व्यक्ति हैं। उस गाँव के लोग तो पंचों के निर्णय के आगे कुछ भी नहीं बोलते। हिमांशु जोशी वर्णन करते हैं -

''लेकिन अधिकांश सीधे-सादे गऊ थे। मुँह लटकाए पीछे रहना, पाच पंचों ने जो कह दिया, माथा झुकाए मान लेना। इससे अधिक सीमा न थी, न सोचने की, न कुछ करने-धरने की।''[18] याने पंच परमेश्वर हैं, ऐसा ही माना जाता है जिसका फ़ायदा उठाते हुए पुरुषोत्तम अपना खर्चा भी निकाल लेते हैं और कुँवरदेव शिकारी के खेत भी अपने नाम खर्चे के बहाने करा लेते हैं। अर्थात् इस प्रकार के स्वार्थी पंचों की राजनीति भी गाँवों में दिखाई देती है, जिसका अत्यंत मार्मिक चित्रण हिमांशु जोशी जी ने किया है।

3.4.2 सामाजिक पृष्ठभूमि -

सामाजिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत अंचल विशेष की सामाजिक स्थिति उजागर होती है। इसमें समाज में होनेवाले वर्ग, जाति भावना, पर्व, उत्सव, त्यौहार, समस्याएँ आदि को अंकित किया जाता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो हिमांशु जोशी ने अपने इस उपन्यास में सामाजिक पृष्ठभूमि का यथार्थ अंकन किया है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हिमांशु जोशी जी का आरंभिक जीवन पहाड़ों में ही बीता है, स्वाभाविक रूप

से वहाँ के अंचल को अत्यंत सजीव रूप से उन्होंने अंकित किया है।

ग्रामीण प्रदेश में जाति-पाति या वर्ग की भावना इतनी अधिक तीव्र होती है कि उससे कभी-कभी संघर्ष भी छिड़ जाता है। हिमांशु जोशी जी ने जिस प्रदेश का वर्णन किया है उस प्रदेश के, उस गाँव के ब्राह्मणों में चाहे अब सिर्फ कुछेक ही बचे हैं जिन्होंने जजमानी का कार्य जारी रखा है। उस व्यवसाय में उन्हें पैसे नहीं मिलते लेकिन फिर भी अपनी कट्टरता के कारण और हल की मूठ पर हाथ न धरने के कारण, चमड़े के हलौंडे को न छूने के कारण उन्हें भूखों मरना पड़ता है लेकिन फिर भी वे अपनी बात पर अड़े रहते हैं। ऐसा कार्य करने से घोर-कलियुग आ जाएगा इस बात का विश्वास उन्हें हैं।

जब कावेरी से मिलने के लिए उस ठेकेदार के घर मानिक चला जाता है, तो वहाँ वह घर के अंदर चला नहीं आता यह देखकर उस घर का नौकर 'बिसना' सोचता है कि शायद कोई अछूत जात का आदमी होगा जो भीतर आने से आनाकानी कर रहा है लेकिन बहू (कावेरी) से मिलना चाहता है।

हिमांशु जोशी जी ने इस प्रदेश के सामाजिक जीवन के अंतर्गत इस प्रदेश के लोगों की समस्याओं को सूक्ष्मता से देखा है। इन समस्याओं के अंतर्गत विधवा, अंतर्जातीय विवाह, दहेज, शिक्षा, सामंती वृत्ति, स्वार्थी भावना, पुलिस द्वारा शोषण, रिश्वत, बहु विवाह, अज्ञान-अशिक्षा, व्यसनाधीनता, अनमेल विवाह, मकान, परिवार विघटन आदि समस्याएँ आती हैं। इन समस्याओं की अधिकतर नारी ही शिकार हुई है।

हिमांशु जोशी जी ने उपन्यास में लधौंन गाँव के पास के गाँवों में होनेवाले और उस गाँव में होनेवाले कुछ मेलों का वर्णन किया है जैसे - हरेले का मेला, देवीधूरे का मेला, सिरी पंचमी का त्यौहार आदि को अत्यंत सुंदर रूप से चित्रित किया गया है। सिरी पंचमी के त्यौहार को ससूराल गयी लड़की या बहन को मायके लाया जाता है लेकिन लड़की या बहन को लाने के लिए जानेवाला व्यक्ति खाली हाथ नहीं जा सकता, इस रिवाज को भी यहाँ चित्रित किया गया है। जब सिरी पंचमी आती है तो कावेरी को लाने के लिए 'बंशी' जाना चाहता है लेकिन खाली हाथ नहीं जा सकता इसलिए रूक जाता है। जब मानिक एक-आध रूपया देने की बात करता है तो वह झट् से तैयार हो जाता है। वह सोचता है कि खेतीखान के बाजार से वह मिठाई लाएगा और फिर वह दीदी के घर चला जाएगा। इस प्रकार सामाजिक पृष्ठभूमि को उजागर करने का प्रयास जोशी जी ने किया है।

3.4.3 धार्मिक पृष्ठभूमि -

धर्म को धारण किया जाता है। प्राचीन काल से ही इस देश में धार्मिकता दिखाई देती है क्योंकि ईश्वर के प्रति एक अंखड विश्वास और श्रद्धा मनुष्य रखता आया है। इस सृष्टि का नियंता वही है और वह जो करेगा वही होगा। हिमांशु जोशी जी द्वारा वर्णित 'कनाली' गाँव के ब्राह्मण भी ऐसे ही हैं। इनमें से अधिकतर ऐसे हैं जो काम नहीं करते। जितना मिल जाए उतने पर ही संतुष्ट रहते हैं। परमात्मा की इच्छा या अपना भाग्य मानकर छोड़ देते थे। घोर कलियुग न आ जाए इसलिए बामन-धरम का निर्वाह करते और चमड़े के हलौंडे को भूल कर भी न छूते। माधव पधान तो जब कभी कोई विपत्ति देखते, दुख देखते तो भगवती मैया, पुन्नागिरी, त्योनरा माई की प्रार्थना करते। अपने पूर्वजन्म के संस्कारों को दोष देते लेकिन पंडित हिरदैराम जैसे कुछ इन्सान भी है जो बूढ़ापे के कारण हाथ-पैर चला नहीं पाते लेकिन पूजा-पाठ में अंतर नहीं आने देते। उनकी स्नान-संध्या अंत तक चलती रही। वे अंधविश्वासी भी है। जब उनका बेटा लगातार तीन साल एक प्रथमा की परीक्षा पास नहीं कर पाता तो वे उसकी और अपनी पत्नी की जन्मपत्री उलट-पलट कर निर्णय करते हैं कि राहू का 'मार्केश' माथे पर से अभी हटा नहीं। इसी कारण वे पूजा करते हैं, जप-ध्यान करते है, तीरथ-व्रत भी करते हैं परंतु शारीरिक दुर्बलता के कारण बीच से ही लौट आते हैं लेकिन फिर भी कड़ी ठंड में स्नान करना नहीं छोड़ते।

गलतफहमी के कारण जब कुँवरदेव के हाथों सुकिया की माँ, पंडित हिरदैराम की पत्नी को गोली लग जाती है तो वह उमर कैद के भय से देवता पुण्यागिरी मैया के दरबार में बकरा चढ़ाने का संकल्प कर लेता है। दूर्गा सप्तशती का पाठ फटकशिला तथा भूमियां देवता के थान में भाख देता है लेकिन फिर भी वह निश्चिंत नहीं हो पाता और उसके इस डर का फायदा पुरुषोत्तम'का जैसे सेठ उठाते हैं। उस सुकिया की बूढ़ी माँ के लिए गाँव के लोग भी मान-मनौती करते, बरम-देवता के थाने में माथा नवाते हैं। यह बात स्वार्थी पुरुषोत्तम'का को अच्छी नहीं लगती थी। वे पुरोहित से उसका अब क्या होगा, इस बारे में पूछने लगते हैं। जब उन्हें पता चलता है कि राहू-केतु अब जल्दी ही पीछा छोड़नेवाले है और परमेश्वर की इच्छा रही तो वह जल्द ही सुधर जाएगी। वे बुढ़िया की मृत्यु के बाद गड़े-धन के बारे में भी बामन से पूछवाते हैं।

गाँव के लोग ईश्वर संबंधी क्या सोचते हैं इस संबंध में हिमांशु जोशी लिखते हैं,

''हर दुख, हर सुख परमात्मा का दिया है। उसकी हर आज्ञा सिर-आँखों पर मानने में ही जीवन की सार्थकता है। सदियों से उनके संस्कारों में यह बात घर करती चली आयी थी। इसलिए दुनिया में उनके लिए कुछ भी नया न था। कुछ भी अनोखा, कुछ भी अनहोना न था। पूर्व जन्म के संस्कारों के सिर पर सारा आल-जाल ड़ालकर अपने कर्तव्यों से निवृत्ति पाना उन्होंने बहुत पहले ही सीखा था, जो हर समस्या के सामने ढ़ाल काम देता है।''[19] इससे गाँव के लोगों की अकर्मण्यता और मानसिकता साफ झलकती है।

पुरुषोत्तम'का की पत्नी को मालूम हो जाता है कि वे दूसरों के धन के पीछे पागल हो रहे हैं, तो वह उन्हें अपनी धरती में गड़े धन को देखने की सलाह देती है। वह कहती है कि सूम के धन पर पेड़ जन जाते हैं, साँप घर बसा के रह जाते हैं और वह यह भी बताती है कि नाशपाती के पेड़ के पास काला भुजंग रहता है। यहाँ गाँव के लोगों का अज्ञान और अंधविश्वास भी दिखाई देता है।

गाँव के लोगों को दुख में साथ देनेवाला कोई नहीं सिर्फ ईश्वर ही है, इस बात का पूरा विश्वास होता है। माधव पधान को झूठे इल्ज़ाम में फँसाकर जब जेल ले जाते हैं तो उनका छोटा बेटा बंशी उन्हीं की तरह हर रोज पूजा-पाठ करने लगता है। फूल चढ़ाता, मूर्ति पर अक्षत-घाली चढ़ाता और पिताजी के लौटने की राह देखता। जब वे जल्दी नहीं आते तो माधव पधान की पत्नी भगवती के थान में सवा चार आने का पाठ भाख देती है। इससे पति जल्दी आयेंगे ऐसा उसका विश्वास है। उनकी स्थिति का वर्णन हिमांशु जोशी जी ने इस प्रकार किया है, -

''पधान के छूटने में तो अब कुछ महीनों की कसर थी। बच्चे बड़ी अधीरता से आने की प्रतिक्षा कर रहे थे। पत्नी रोज सुबह-शाम फटकशिला देवता की धूनी में दीया बालती। व्रत रखती। मान-मनौती करती। हाथ जोड़कर, रोकर, गिडगिड़ाकर प्रार्थना करती।''[20]

यहाँ उसका अंधविश्वास साफ झलकता है। यही बात कावेरी भी मानिक के लौटने के इंतजार में करती है।

अर्थात् हिमांशु जोशी जी ने जिस पहाड़ी अंचल का वर्णन किया है, उसमें तो अज्ञान और अशिक्षा है, इसी कारण इस प्रदेश के लोग पूरी तरह से अंधश्रद्ध है। इनमें धर्म के प्रति विश्वास, बहुदेववाद, धार्मिक भावना का ह्रास, परंपराप्रिय समाज, अंधविश्वास दिखाई देता है जिसे जोशी जी ने सार्थ रूप में

प्रस्तुत कर दिया है।

3.4.4 आर्थिक पृष्ठभूमि -

अर्थ मनुष्य के जीवन को संचालित करनेवाली महत्त्वपूर्ण शक्ति है। उसी के बलबूते पर मनुष्य अपना व्यापार-व्यवहार करता है। अगर अन्य किसी भी प्रकार की कमी मनुष्य के जीवन में हो तो मनुष्य ठीक रहता है, लेकिन अर्थ की कमी या अर्थाभाव मनुष्य के जीवन को झकझोर देता है। पहाड़ी अंचल की तो स्थिति यह होती है कि एक ओर प्रकृति की अपार देन मिलती है और दूसरी ओर प्रकृति की कृपणता होती है। 'कमाली' गाँव के लोग सूखी धरती पर मेहनत करने से थक गए हैं। छोटी-छोटी फसलों पर मेहनत करना नहीं चाहते थे। आलू बोने, ढाबा चलाने आदि से भी काम नहीं चला। पुश्तैनी जजमानी का व्यवसाय ठीक से नहीं हो पाता था और वह भी बँट चुका था। अत: घर की औरतें काम करती रहती और काम न करनेवाले लोग घर में आराम से बैठे रहते, ताश खेलते और औरतों द्वारा कमाकर लाए पैसों को दाँव पर लगाते।

गाँव के इन लोगों की आर्थिक विपन्नता इतनी है कि रकम-कलम का हिसाब चुकाने के लिए घर की चीजें गिरवी रखनी पड़ती हैं। सुक्की की माँ के पास जब रकम-कलम का हिसाब चुकाने के लिए पैसे नहीं होते तो वह घर में होनेवाली टूटी-फूटी दो कलशियाँ गिरवी रखकर ढ़ाई रूपये लेकर आती है और हिसाब चुका देती है।

जब पुरुषोत्तम'का को मालूम हो जाता है कि सुकिया की माँ की मृत्यु हो रही है तो वे पहले तो उसकी ओर ध्यान नहीं देते थे क्योंकि उसके पास कोई पैसा नहीं है जैसे -

''वह अच्छी तरह से जानते थे कि टूटी मड़ैया में भूटी भांग भी अब शेष नहीं है। कुछ पहले मानिक बराबर कर गया और शेष रहा-सहा हिरदैराम के क्रिया-कर्म में चढ़ चुका। जमीन रहन है, यानी कि बिक-बिका चुकी है एक तरह से। उसे वापस लेने का सामर्थ्य फिर है भी किस में! गई, सो गई।''[21] अर्थात सिर्फ स्वार्थ जहाँ हो वहीं मदद करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

जब बिना वजह पधान को पकड़कर ले जाते हैं तो गाँव के लोग पधानी से पूछने लगते हैं।

वे जब घर की हालत के बारे में पूछते हैं कि खाने-पीने का क्या बंदोबस्त है? अनाज-पानी है? तो पधानी कहती है -

''खाने-पीने का तो कुछ-न-कुछ हो ही जाएगा। पापी पेट में रूखा-सूखा कुछ ठूंस ही लेंगे। कहीं भगवान न करे, उनको कुछ हो पड़ा तो ये नादान बाल-बच्चे किधर जायेंगे?''[22] उसके इस वाक्य से उनकी दयनीय आर्थिक स्थिति का चित्र दृष्टिगोचर हो जाता है। ऐसी स्थिति में उसे पेट की चिंता से ज्यादा अपने चार दिन से गायब होनेवाले पति की चिंता है।

पुरुषोत्तम'का जब सुकिया की माँ के धन के पीछे पागल हो जाते हैं तो उनकी पत्नी उसे खरी-खोटी सुनाती है। उस वक्त जितने भी लोगों पर पुरुषोत्तम'का ने अन्याय-अत्याचार किया उन सब का कच्चा-चिट्ठा खोल देती है और आज वे लोग कितनी विपन्नावस्था में जी रहे हैं, इसकी जानकारी देती हैं जिसमें शिकारी कुँवरदेव, सुकिया, माधव पधान आदि सभी का जिक्र कर देती है।

'कनाली' गाँव में जब हिम वर्षा होने लगती है तब अधिकांश लोग वहाँ से उठकर तराई के मैदानों की ओर जाने लगते हैं। उनकी भूखमरी की स्थिति को हिमांशु जोशी जी ने इसप्रकार प्रकट किया है। ''अधिकांश लोग घाम तापने, पेट भरने के लिए तराई के मैदानों की तरफ उतर गये थे - गाय - बछड़े, माल-असबाब सब लादकर। यही तो एकमात्र उपाय था जो भयंकर भुखमरी और शीत से त्राण देता। थकी जिंदगी को गति देता। सहारा देता।''[23] उनके इस वाक्य से उनकी भुखमरी की स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

जब इस प्रदेश में अकाल पड़ता है तो मानिक पूरे गाँव का चक्कर काटता है। पूरे गाँव में भूखमरी उसे दिखाई देती है। उनकी स्थिति अत्यंत बिकट है -

''पिछली कुछ फसलें लगातार बरबाद हो गयी थी। अकाल महामारी की-सी स्थिति थी। सूखे खेतोंपर हड्डियाँ तोड़ने और खून पसीना बहाने के बाद क्या कुछ तिनके उग पायेंगें इसका भी क्या भरोसा! वैसे ही लाले पड़ रहे थे-प्राण के। फिर काम कौन देता? कहाँ से देता?''[24] ऐसी भीषण स्थिति से पूरा गाँव गुजर रहा था। कहीं से भी काम मिलना मुश्किल था और आर्थिक विपन्नावस्था चल रही थी। इसी कारण जब चीन का भारत पर आक्रमण हो जाता है तो ये लोग ड़र जाते हैं क्योंकि इससे इलाके की तबाही के

साथ वस्तुएँ महंगी हो जाएगी, नहीं मिलेगी। भूखमरी तो चल ही रही है, अकाल है, अब रही-सही कसर भी पूरी हो जाएगी।

पूरी तरह इन पहाड़ी लोगों के जीवन को अर्थाभाव सता रहा है। ऊपर से महाजन, साहूकार आदि भी उनके पीठ पर सवार है। कर्जे के बोझ से दब गए हैं। सरकारी अफसर भी पैसे ऐंठ लेते हैं, तरह-तरह के अन्याय-अत्याचार करते हैं। इसी कारण अर्थाभाव की स्थिति से ये पूरा इलाका ही गुजर रहा है। हिमांशु जोशी जी ने इनकी विपन्नावस्था का करूण दृश्य उपस्थित कर दिया है।

3.5 'अरण्य' उपन्यास में लोकसंस्कृति :-

लोकसंस्कृति के अंतर्गत लोकसाहित्य, लोकगीत, लोकनृत्य, लोक कलाएँ आदि आ जाता है। हिमांशु जोशी जी ने इन सभी को अपने उपन्यास 'अरण्य' में चित्रित करते हुए लोकजीवन के समग्र रूपों को उजागर कर दिया है। उस प्रदेश विशेष में होनेवाली रूढ़ी-परंपराएँ , रीति-रिवाज, आदि का सुंदर चित्रण उन्होंने किया है।

3.5.1 परंपरा -

हिमांशु जोशी जी ने 'कनाली' गाँव में होनेवाली परंपरागत विवाह पद्धति के बारे में बताया है कि माधव पधान के पूर्वजों की परंपरा यह है कि कन्या का विवाह आठ और पुत्र का दस से अधिक आयु में नहीं करना है। उनके दादा, परदादाओं ने, पिताजी सभी ने इस परंपरा का निर्वाह किया परंतु अर्थाभाव के कारण केवल वे ही उसे निभा नहीं पाए। इस बात का उन्हें दुख है। एक और परंपरा का उल्लेख भी जोशी जी ने किया है। यह पूरा गाँव ब्राह्मणों का है। वे यह मानते हैं कि अगर चारों वर्ण अपने-अपने धर्म में नहीं टिके तो इस घोर कलिकाल में दिन-दहाड़े कोरे आकाश से ब्रज बरसेगा। मुख फाड़े प्रलय आ जाएगा लेकिन लेखक का विचार यह है कि शायद रोज की समस्याओं से त्रस्त होकर वे ऐसा सोचते हैं।

3.5.2 रीति -

गाँव में कुछ रीतियों का प्रचलन भी था। जिनमें से मृत्यु के पश्चात् होनेवाली रीतियों का वर्णन जोशी जी ने किया है। जब सुकिया की माँ मर जाती है तो उसके ज़र्जर हाथों से गाय का दान करा दिया

जाता है। दस पैसे बामन के हाथ में धर कर गोदान और वैतरणी की रीत पूरी की जाती है। इससे गाँव के लोगों की गोदान में होनेवाली श्रद्धा साफ झलकती है।

3.5.3 त्यौहार -

देहाती लोगों में त्यौहार मनाने की पद्धति भी अलग ढ़ंग की होती है। जोशी जी ने पहाड़ी अंचल में होनेवाले सिरी-पंचमी त्यौहार का वर्णन किया है। इस त्यौहार के लिए ससुराल गयी लड़की या बहन को मायके लाया जाता है। कावेरी अपने मामा के बेटे 'बंशी' का इस दिन बड़ी तीव्रता से इंतजार करती है। परंतु यह प्रथा भी होती है कि लड़की या बहन के घर खाली हाथ नहीं जाना चाहिए। इसी कारण बंशी उसे लाने नहीं जाता।

3.5.4 मेले -

इस उपन्यास में कई मेलों का चित्रण जोशी जी ने किया है। जैसे कटकशीला, देवीधूरा आदि। इन मेलों में अंचल विशेष की सांस्कृतिक झलक दिखाई देती है। अर्थाभाव के कारण 'कनाली' के लोग मेले का सही आनंद उठा नहीं पाते। फिर भी देवीधूरे के मेले में अपने दुखों को भूलकर लोग गाते नाचते दिखाई देते हैं। वैरागान करते हैं। ''रंगीली औरतें, - रंगीले मरदों के झुंड-झुंड वैरा गा रहे थे - ओ इ! तीले धारो बोला बचू......!''[25] इस लोकगीत की तान पर सभी लोकनृत्य करते हैं। इसमें होनेवाली उनकी एकाग्रता में दुखों को भूलने का प्रयास दिखाई देता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि लोकसंस्कृति के अनेकानेक रूपों को हिमांशु जोशी जी ने अपने उपन्यास में चित्रित किया है। इस उपन्यास में पहाड़ी अंचल के लोकसंस्कृति का प्रभावी चित्रण हुआ है।

3.6 युगीन चेतना की अभिव्यक्ति :-

हिमांशु जोशी जी ने आँचलिक उपन्यास लिखा हो परंतु उसमें तत्कालीन परिस्थितियों का अंकन भी अत्यंत सुंदर ढंग से किया है। उन्होंने उस वक्त का वर्णन किया है, जब भारत पर चीन ने आक्रमण किया। इस आक्रमण का असर इन पहाड़ी प्रदेश के लोगों पर यह हो गया कि उन्हें ड़र लगने लगा। चीजों के महँगेपन का ड़र उन्हें सताने लगा क्योंकि पहले से ही अकाल जैसी स्थिति थी और भूखमरी थी उस पर युद्ध

शुरू हो जाएगा तो उन्हें चीजें मिलेगी नहीं। इस स्थिति को जोशी जी ने अत्यंत यथार्थ रूप में अंकित किया है।

3.7 प्राकृतिक स्थिति के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का चित्रण :-

कोई भी समाज समस्या के बिना नहीं होता। हिमांशु जोशी जी ने इस प्रदेश के सामाजिक जीवन की समस्याओं का अंकन किया है, जो अधिक मात्रा में मिलता है। इसमें अधिकतर नारी से संबंधित समस्याएँ आती हैं जिनका विवेचन निम्नप्रकार से है -

3.7.1 वर्ग तथा जातिभावना -

'अरण्य' उपन्यास में जोशी जी ने निम्न वर्ग तथा निम्न मध्यवर्ग का चित्रण किया है जिसमें वर्ग संघर्ष तथा जाति भावना को प्रधानता दी है। निम्न वर्गियों की स्थिति दयनीय होती है लेकिन निम्न मध्यवर्गियों का स्थान उनसे अधिक अच्छा रहता है। 'कनाली' गाँव में स्थित सेठ, साहुकार, जमींदार अनेकों का शोषण करते रहते हैं। इस उपन्यास में पुरुषोत्तम नामक एक पात्र ऐसा दर्शाया है जो अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकता है। सरकारी अफसर तथा पटवारी, पेशकार भी किसी न किसी कारण को लेकर गाँव के लोगों को फँसाते रहते हैं। यह वर्ग-वर्ग का संघर्ष सामाजिक विषमता का मुख्य कारण बना है। इस उपन्यास के पात्रों का अपना-अपना एक सपना है लेकिन घुटनभरी जिंदगी, आर्थिक विपन्नावस्था, बेकारी, खाने-पीने की कमी और रहने के लिए मकान आदि अनेक समस्याओं के कारण उनके सपने टूट जाने का चित्रण इसमें मिलता है। जमींदार, साहुकार निम्नवर्गियों से मुफ्त में बेगार करवाते हैं। उनकी घमंड, कठोरता तथा निर्दयी होने का जिक्र इसमें किया है। विभिन्न राजनीतिक संघर्ष तथा जाति भावना के कारण आम जनता को किस प्रकार हानी पहुँचती है इसे चित्रित करने में जोशी जी सफल हुए हैं। 'अरण्य' उपन्यास में स्त्री-स्त्री का द्वेषभाव भी दिखाई देता है। अत: वर्ग तथा जाति भावना को स्पष्ट रूप से उजागर करने में जोशी जी सफल हुए हैं।

3.7.2 अज्ञान / अशिक्षा समस्या -

जिस प्रकार आधुनिक काल में शिक्षा के प्रति शहरों के युवा वर्ग में अनास्था निर्माण हो गई है, लगभग उसी प्रकार की अनास्था गाँवों में भी निर्माण हो गई है। एक बार जब शहर की हवा गाँव के लड़कों को लग जाती है तो शिक्षा में होनेवाली उनकी आस्था टूट जाती है तो नित नये गुल खिलाने शुरू कर देते हैं।

जासूसी उपन्यासों को पढ़कर उन्हीं के समान व्यवहार करना, स्याह रूमाल बाँधकर चमत्कार दिखलाना, वृद्धा माँ के कड़े चोरी करना, गुल्लक की चीजें उड़ाना आदि कार्य करना वह शुरू कर देता है। इसी कारण पंडित हिरदैराम के द्वारा चाहें जितनी कोशिश क्यों न की जाए मानिक सुधर नहीं पाता और आगे पढ़ भी नहीं पाता। उसके व्यक्तित्व में हुए इस परिवर्तन के कारण उसका पूरा जीवन ही बरबाद हो जाता है।

आधुनिक काल में यद्यपि शिक्षा का प्रचार और प्रसार काफ़ी हद तक हो गया है फिर भी कुछ गाँवों में अभी-भी अज्ञान का अंध:कार फैला हुआ है। हिमांशु जोशी जी द्वारा वर्णित 'कनाली' गाँव भी कुछ इसी प्रकार का है। इस गाँव के लोग इतने अज्ञानी है, इतने अशिक्षित है कि वे वर्दीवाले किसी भी आदमी से डरते हैं। यदि वह चिठ्ठीरसैन भी है तो भी। पहले तो उसकी वर्दी को देखकर सभी डर ही जाते हैं कि शायद अब कोई बड़ी आफत आनेवाली है। जब यह नया पोस्टमैन गाँव में माधव पधान की चिठ्ठी लेकर आता है, और नाम पूछता है तो पहले तो लोग डर जाते हैं। वे उसकी बिनती करते हुए उसे हुजूर, माई-बाप, सरकार, गरीब-परवर जैसे नामों से संबोधित करते हैं। जब वह चिठ्ठी देता है तो सभी के जान में जान आती है, लेकिन वे तो उसे पढ़ नहीं पाते इसी कारण उसे ही पढ़ने के लिए कहते हैं -

''सरकार, माई-बाप! हम तो मुरख पशु है। लिखना पढ़ना क्या जानें ! आप सुना देंगे?''[26]

इस वाक्य से ही उन गाँववालों का अज्ञान साफ झलकता है। इस अज्ञान के कारण ही वे अंधविश्वासी बन जाते हैं।

3.7.3 अन्याय / अत्याचार -

किसी भी प्रदेश का कोई भी हिस्सा क्यों न हो पुलिसों के अन्याय, अत्याचार से छूटता नहीं हैं। 'कनाली' गाँव में साहुकार, जमींदार आदि के द्वारा तो शोषण होता ही है परंतु साथ ही साथ पुलिस के द्वारा भी उन पर अन्याय, अत्याचार किए जाते हैं। तराई-भाभर में हुई देवदार के वृक्षों की कटाई के बारे में सरकारी रूप से जाँच होती है तो पटवारी बहुत सोच में पड़ जाता है। जब माधव पधान जैसे निरीह ब्राह्मण को वह देख लेता है तो उसे ही पकड़ लेता है। उसे बहुत पीटकर झूठी गवाही देने के लिए मजबूर करता है। माधव पधान तो उसके पैरों से लिपट जाता है। वह गला फाड़-फाड़कर कहना चाहता है -

''आपने ही तो हुक्म दिया था। आपने ही तो कहा था। मैं क्या करता? पेट के लिए मजदूरी न करता तो क्या जहर खाता? बाल-बच्चों को भी क्या जहर खिला देता? आत्महत्या करता? आपने ही तो कहा था कि मजदूरी मिलेगी। दिन-रात जुटकर काम करना होगा। मजदूरी-मेहनत के रूपए भी तो आज तक पूरे नहीं दिए। छोटे-छोटे दुध-मुँहे बच्चों तक ने काम किया। बहू-बेटियों तक ने काम किया। सरकार, माई-बाप का काम अपना काम समझकर खून-पसीना एक किया। उसी की आज यह सजा।''[27]

माधव पधान ये सारी बातें कहना चाहता था परंतु कह नहीं पाता। उसे जबरदस्ती जेल में डाल दिया जाता है और उस पर झूठे इल्जाम भी साबित किए जाते हैं। इस सिलसिलें में जब घर की औरतों के भी बयान होंगे यह सुनकर माधव पधान खुद ही गुनाह कबूल करते हैं। इस प्रकार के अन्याय-अत्याचारों के जरिए पुलिस अपने द्वारा हुए गलत कृत्यों के लिए अच्छे-भले, शरीफ इन्सानों को दाँव पर लगा लेते हैं लेकिन अज्ञानी लोग उसके विरोध में आवाज तक नहीं उठा पातें।

2.9.3 स्वार्थी प्रवृत्ति -

स्वार्थ की यह आग तो आज पूरे देश में फैल चुकी है। बिना रिश्वत दिये कोई भी सही-गलत काम आजकल नहीं होता। इसी कारण 'अरण्य' उपन्यास का देवदार वृक्षों की चोरी में हाथ होनेवाला पटवारी जाँच-पड़ताल के लिए आये हुए पेशकार को रिश्वत देता है और निरीह माधव पधान को चोरी के इल्जाम में फँसा देता है। पेशकार अपने स्वार्थ के लिए सभी रिश्वतें स्वीकार करता हैं। पटवारी और पेशकार के इशारों पर सारा गाँव नाचने लगता है। वे नहीं चाहते हैं कि,

''गाँव में अधिक परेशानी उपजे । बहू-बेटियों की इज्जत में बट्टा लगें। लाल पगड़ी की काली छाया गाँव में फिर दिखलाई पड़े और फिर अधिक पिटाई-टुकाई हो। औरतों के गहने उतार-उतारकर सरकारी कागजों के पेट भरें। घर लूटें। और अंत में हाथ भी कुछ न आए।''[28]

इसी डर से सभी झूठा इल्जाम लगाने के लिए तैयार हो जाते हैं। पधान तो जेल चले जाते हैं लेकिन इसी बीच गाँव में और दो-तीन आशंका युक्त घटनाएँ हो जाती हैं जैसे मानिक की माँ की मृत्यु, कुँवरदेव की हत्या में भी गाँववालों का ही हाथ है ऐसा कहता है और पुरुषोत्तम'का को बुलाकार गाँववालों से रूपए एक हजार वसूल कर लेते हैं। उसमें से सिर्फ रूपए आठ सौ ही पटवारी को दे देते हैं। इसमें से भी

अपने मेहनताने के रूप में रूपए दस ऐंठ लेते हैं। अर्थात् कोई भी सरकारी अधिकारी किसी भी कारण को सामने कर गाँववालों से पैसे ऐंठ लेते हैं। इस समस्या पर हिमांशु जोशी जी ने प्रकाश ड़ाला है।

3.7.5 व्यसनाधीनता की समस्या -

दुख, दारिद्रय, संकट आदि से युक्त गाँव के लोगों को अपने मन को बहलाना बहुत आवश्यक हो जाता है। अपने मन को बहलाने के लिए ये लोग तमाखू खाते हैं, शराब पीते हैं, गांजा पीते हैं, जुआ खेलते हैं लेकिन इस व्यसनाधीनता के कारण उनमें झगड़े-फसाद भी होते हैं। लोग अपना आपा खो देते हैं। हिमांशु जोशी जी ने 'कनाली' गाँव में होनेवाले लोगों के जीवन में भी मन बहलाने के लिए यही कुछ किया जाता था जिसका चित्रण इसमें मिलता है। गाँव के लोगों में मानिक, माधव पधान का बेटा हरसू, पटवारी, पेशकार आदि लोग आते हैं जो व्यसनाधीन हैं। इन सभी की व्यसनाधीनता के कारण गाँव के लोगों के साथ-साथ उनके परिवार के लोगों को भी बहुत तकलीफ सहनी पड़ती है। मानिक की व्यसनाधीनता के कारण उसके पिता की मृत्यु हो जाती है। माधव पधान के बेटे हरसू की व्यसनाधीनता के कारण उनको मन:स्ताप सहना पड़ता है। पटवारी और पेशकार व्यसनाधीन होने के कारण ही तो गाँववालों को शारीरिक, मानसिक, आर्थिक सकटों को सहना पड़ता है। इसी कारण व्यसनाधीनता भी एक समस्या है। इस समस्या का समाधान तक नहीं निकला।

3.7.6 विवाह समस्या -

आज विवाह एक नैतिक बंधन माना जाता है। धार्मिक पवित्रता के साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन को स्थिरता देनेवाली परंपरा विवाह है। विवाह के अनेक प्रकार माने जाते हैं जिसमें विधवा विवाह, अनमेल विवाह, बहु विवाह, बाल विवाह, प्रौढ़ा अविवाहिता का विवाह, प्रेम विवाह आदि सम्मिलित हैं। विवाह में कुलीनता तथा दहेज रूकावट बनती जा रही है। समाज में पुरुष-प्रधान संस्कृति होने के कारण स्त्री को दूसरा स्थान दिया जाता है। पुरुष अपनी भावना तथा इच्छा को अधिक स्थान देते हैं। फिर भी नारी ही संवेदनशील लगती हैं। आज विवाह के लिए जातीयता तथा नौकरी करनेवाले व्यक्ति को प्रधानता दी जाती है। अनेक बार विवाह विच्छेद की समस्या भी सामने आती है। इन अनेक समस्याओं के कारण अनेक स्त्रियाँ अविवाहित भी रहती हैं। इससे विवाह एक समस्या बन गई दिखाई देती है। अत: 'अरण्य' उपन्यास में चित्रित विवाह समस्याओं के विभिन्न प्रकारों को निम्नप्रकार से देखा जा सकता है -

3.7.6.1 विधवा विवाह समस्या -

रूखलि माधव पधान के बड़े बेटे की पत्नी है। उनके बड़े बेटे बिस्सू का ब्याह रूखलि के साथ हो जाता है, लेकिन दूसरे ही साल उसकी मृत्यु हो जाती है। जवान बेटे की मौत से माधव पधान टूट जाते हैं। बेटे की मौत के पश्चात् जवान विधवा बहू को देख उन्हें बेहद कष्ट होता है। वे उसे अपने बेटे के ही समान सारे अधिकार देना चाहते थे लेकिन उनकी दूसरे ब्याह की पत्नी पधानी को यह मंजूर नहीं है। इसी कारण उस घर में उसे बेहद दुख मिलता है। वह स्वयं कावेरी से कहती है -

''दुख किसे नहीं आता! मुझसे बड़ी अभागिन दुनिया में क्या और भी होंगी। मुझे ही देखो न ! फिर यों प्राण निकालना क्या ठीक है? आत्मघात तो नहीं किया जा सकता न ! दिन तो रो-धो के काटने ही पड़ते हैं।''[29]

रूखलि के इस वाक्य से ही पता चलता है कि उसे कितना दुख है। विधवा जीवन का अभिशाप उन्हें भोगना पड़ रहा है। जब उसके भाई की शादी का न्यौता आता है तब भी उन्हें अपने साथ आने के लिए सभी की मिन्नतें करनी पड़ती हैं। अर्थात् सिर्फ शारीरिक ही नहीं मानसिक कष्टों को भी विधवाओं को झेलना पड़ता है।

3.7.6.2 अनमेल विवाह समस्या -

प्राचीन काल में इस देश में छोटी उम्र की लड़की के साथ बूढ़े व्यक्तियों का ब्याह किया जाता था। इसी कारण वह छोटी उम्र में ही विधवा हो जाती थी। आज भी कुछ गाँवों में यही प्रथा है। 'कनाली' गाँव की कावेरी के साथ भी लगभग इसी प्रकार की स्थिति हो जाती है। माँ-बाप न होने के कारण कावेरी अपने मामा के घर में रहती है और आर्थिक विपन्नावस्था के कारण उसकी शादी एक बूढ़े ठेकेदार के साथ हो जाती है। उसे दो सौंते भी है जो बूढ़ी हो चुकी है। उसकी बूढ़ी सौंतें ठेकेदार की सारी संपत्ति हड़पने पर तुली हुई है। इसी कारण जब कावेरी को बच्चा हो जाता है, तो उनकी आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ी हुई होती है कि ठेकेदार सोच में पड़ जाते हैं। मानिक तो उससे कहता भी है -

''कावेरी, तुमने ये क्या हाल कर लिये अपने ! मानिक बुदबुदाया, बूढ़े ठेकेदार हैं। गोदी

का बच्चा है। पास पैसा नहीं। बीमारी पालने लगी तो सबका क्या होगा?''[30]

अर्थात् बाद में उनकी स्थिति इतनी बिगड़ जाती है कि काम करके कावेरी का रूप सौंदर्य तो नष्ट हो ही जाता है परंतु उसे बीमारी भी ग्रस्त कर देती है। सिर्फ अपने मामा के परिवारवालों को सुख देने के लिए वह इस अनमेल विवाह के लिए तैयार हो जाती है। अभी-भी पूरी तरह से इस समस्या का अंत नहीं हुआ है। आज भी कभी-कभी पैसे के लिए अनमेल विवाह हो जाते हैं जिसके भयानक दुष्परिणामों को आम तौर पर नारी को ही भुगतना पड़ता है।

3.7.6.3 बहु विवाह समस्या -

प्राचीन काल में इस देश में यह प्रथा अधिक मात्रा में प्रचलित थी। वैसे आज भी यह समस्या थोड़ी बहुत मात्रा में गाँवों में दिखाई देती है। जिसका कारण अज्ञान या अशिक्षा माना जाता है। 'अरण्य' उपन्यास का माधव पधान भी अपनी पहली पत्नी की मृत्यु के पश्चात् दूसरा ब्याह कर लेते हैं। उनकी दूसरी पत्नी उन पर रोब जमाती है। जब वह बोलने लगती है तब उनकी बोलती ही बंद हो जाती है। इसी प्रकार इस गाँव के पुरुषोत्तम'का भी दूसरा ब्याह कर लेते हैं लेकिन उनकी भी स्थिति लगभग माधव पधान के जैसी ही हो जाती है। उनकी यथार्थ स्थिति का अंकन हिमांशु जोशी जी ने इस प्रकार किया है -

''पहले का जैसा जमाना होता तो पता नहीं अब तक क्या कर बैठते ! लेकिन अब वह तरबरापन, तीखापन छदामभर भी बचा न था। तन शिथिल था। मन शिथिल था। दूसरे ब्याह की पत्नी थी। ....पर गुस्सा किसी हद तक शिथिलता के साथ बढ़ आया था। लेकिन हो कुछ न पाता - केवल दांत पीसकर रह जाते।''[31] अर्थात् दूसरी पत्नी के आ जाने के कारण उनकी स्थिति दयनीय बन जाती है।

कावेरी का ब्याह जिस बूढ़े ठेकेदार के साथ करने की बात तय हो गई थी, वह भी पहले दो औरतों के साथ शादी कर चुका है जो अब बूढ़ा हो चुका है। ऐसी स्थिति में उस बूढ़े ठेकेदार के साथ कावेरी की शादी तय हो जाती है। फटकशीला के मेले में जब ठेकेदार के घरवाले और ठेकेदार जब उसे देखता है तो उसकी वास्तविक स्थिति कैसी हो जाती है, इसका चित्रण हिमांशु जोशी अत्यंत मार्मिक भाषा में करते हैं। जब कावेरी उनकी ओर देखती है तो उसे दिखाई देता है कि,

''झुर्रियों से ढ़का चेहारा। भौं के बाल तक सफेद। एक भी काला खूंट कहीं नहीं। दुर्बल तन सिकुड़ी खाल हड्डियों से लड़-झगड़कर अलग छिटकती हुई। दो-तीन उसी उमर के और सज्जन बैठे हैं। चिलम चल रही है। समझने में समय न लगा कावेरी को कि वे जो दो बूढ़ी औरतें उत्सुकता से उसकी ओर देख रही है, और कोई नहीं - उसकी होनेवाली सौतें है।''[32] इस बात से स्पष्ट है कि कावेरी जैसी छोटी उम्र की लड़की का ब्याह दो पत्नी वाले बूढ़े ठेकेदार के साथ होनेवाला है।

इससे यह स्पष्ट होता है, औरत ही एक ऐसी नग्मा है जो बूढ़े के साथ शादी के लिए तैयार होती है। मजबूरी उन्हें इस पथ पर ले जाती है। कोई जवान मर्द एक बूढ़ी औरत के साथ शादी नहीं कर सकता। इससे औरत सहनशीलता का प्रतीक किस प्रकार है यह दिखाने की कोशिश की है। इसके साथ-साथ उपन्यास में बहु विवाह समस्या को अंकित किया है। उन्होंने यह दिखाया है कि जिस अंचल की यह कथा है, वहाँ इसे समस्या नहीं माना जाता। इस प्रकार के संबंध को गाँव के लोग स्वीकार कर लेते हैं। उन्हें इसमें कुछ भी अचरज की बात नहीं लगती।

3.7.6.4 दहेज समस्या -

नारी जाति के अभिशाप के रूप में होनेवाली दहेज समस्या नारी शोषण का एक जीवंत रूप है। प्राचीन काल से यह समस्या चली आ रही है और गाँवों में अज्ञान और अशिक्षा के कारण यह समस्या और भी अधिक विस्तृत मात्रा में फैल रही है और 'कनाली' गाँव उसके लिए अपवाद नहीं है। इस गाँव के पंडित हिरदैराम जजमानी किया करते थे। उनका बेटा पढ़-लिख ले यह उनकी इच्छा थी। वे जानते थे कि चाहे पीढ़ी-दर-पीढ़ी जजमानी का बँटवारा होता आया है लेकिन उनकी इकलौती संतान होने के कारण उसका बँटवारा नहीं था। ढ़लती उम्र में एक कन्यारत्न ने उनके घर में जन्म लिया था परंतु उसकी जरा भी चिंता उन्हें नहीं थी। हिमांशु जोशी जी ने उनके विचारों को इस प्रकार प्रस्तुत किया है -

''वे भली-भाँति मानते थे कि सब जीव दुनिया में अपने-अपने करम लेकर आते हैं और चले जाते हैं। फिर पुरोहिताई की टूटी-फूटी कमाई भी तो थी कुछ ! वह कन्यादान के वक्त काम न आयी तो फिर कब आयेगी।''[33]

अर्थात् अगर लड़की की शादी करनी है, तो उसके लिए उसके कन्यादान के लिए कुछ

रकम जुटाकर रखनी ही पड़ती है। एक बार लड़की के हाथ पीले कर दिए तो पिता के कर्तव्यों की इतिश्री हो जाती है लेकिन उसके लिए वर दक्षिणा जुटाने में ही पिता की कमर टूट जाती है।

3.7.6.5 अंतर्जातीय विवाह समस्या -

वैसे तो आधुनिक काल में अंतर्जातीय विवाह करनेवालों की ओर शिक्षित लोग उतनी उपेक्षा से नहीं देखते हैं परंतु अभी-भी जहाँ अज्ञान और अशिक्षा फैली है, वहाँ एक समस्या खड़ी हो जाती है। जोशी जी ने जिस गाँव का वर्णन किया है, वहाँ सभी ब्राह्मण रहते हैं। लेकिन गाँव के माधव पधान का बेटा हरसू एक तो पहले से ही अत्तर-शुल्कई पीने, जुआ खेलने लगता है लेकिन जब वह किसी छोटी जाति की औरत के साथ रहने लगता है तो गाँववाले उसे देखना भी पसंद नहीं करते। हिमांशु जोशी जी ने अत्यंत सुंदर ढंग से उसकी उपेक्षा का वर्णन किया है -

''हरसू के काले कारनामों में रही सही ड़ोर भी किसी छोटि जाति की चतुर औरत जात के चक्कर में पड़ने के कारण भाई-बिरादरीवालों ने पैना-पात तोड़कर, दूध में गिरी मख्खी की तरह उसे परे छिटक दिया था। पास ही लोहारों के गाँव में उसी औरत जात के साथ उसने अपना घर बसा लिया। बामनों के गाँव-भर से उसका अब तिल-भर भी लग-लगाव न था। उस ओर वह भूले से भी फटकता न था। किनारे-किनारे चला आता। यों ही किसी की निगाह पड़ी नहीं कि पच्च से उसी ने आँख मूँदकर सामने थूक दिया। उससे बात करना तो दूर रहा, उसे फूटी आँख देख सकना भी किसी को सुहाता न था।''[34]

अर्थात् अंतर्जातीय विवाह के प्रति इतनी घृणा गाँववालों के मन में हैं लेकिन ऐसे गाँव में इतना क्रांतिकारी कदम उठाना हरसू की विशेषता मानी जा सकती है।

3.8 परिवार विघटन की समस्या :-

औद्योगीकरण के साथ ही आधुनिक काल में परिवार विभाजन की शुरूआत हुई है, क्योंकि इससे पहले सम्मिलित परिवार हुआ करते थे लेकिन भारतीय समाज में परिवारों में झगड़े-फिसाद तो प्राचीन काल से चले आ रहे हैं। इसी कारण भी परिवार विभाजन हो जाता है। गाँवो में जमीन के बँटवारें को लेकर काफी संघर्ष होता रहता है। इसी का उदाहरण 'अरण्य' उपन्यास में ठेकेदार का परिवार है। इस परिवार में

भाइयों के झगड़े के कारण घर-जमीन का बँटवारा नहीं होता बल्कि ठेकेदार की दो पत्नियों के कलह और कारिंदों पर निर्भर कामकाज के कारण निरंतर होनेवाली चिंता और आशंका के कारण होता है। इसी कारण ठेकेदार अपनी तीनों पत्नियों में सारी चीजों का बँटवारा कर देते हैं -

''तीन बराबर-बराबर भागों में खेत-खलिहानों का विभाजन हुआ। घर द्वार बँटा। पैसा-पाई बँटा। सबकुछ बँट गया।''[35]

अर्थात् जब किसी व्यक्ति के जीवन में एक साथ कई पत्नियाँ आ जाती है, तब उसका सारा पैसा दाँव पर लगता है और घर में कलह बढ़ जाता है लेकिन बँटवारे से मनुष्य की हवस पूरी नहीं हो पाती।

इस प्रकार हिमांशु जोशी जी ने अपने 'अरण्य' उपन्यास में कई सामाजिक समस्याओं का अंकन किया है।

निष्कर्ष -

हिंदी साहित्य में अनेक विद्वानों ने आँचलिक उपन्यास के तत्वों पर चर्चा की हैं हरिशंकर दूबे जी ने बताए तत्वों को उपन्यास तत्वों के पारंपरिक क्रमानुसार रखकर हमने हिमांशु जोशी के 'अरण्य' उपन्यास में आँचलिकता को परखने का प्रयास किया है। जोशी जी ने इस उपन्यास में हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी अंचल के 'कनाली' गाँव का चित्रण विस्तार से किया है। उन्होंने उस क्षेत्र विशेष को ही कथानक का आधार बनाया है जिससे वहाँ की हर बात की चर्चा इसमें की है। कथानक ही इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है। भौगोलिक दृष्टि से देखे तो इसमें वर्णित गाँव के पश्चिम और दक्षिण की ओर की आबादी, लुधिया नदी और धान उगाने की क्रिया को दर्शाया है। उस प्रदेश के मकान, वहाँ के लोगों के व्यवसाय और मेलों का वर्णन करने में भी जोशी जी सफल हुए हैं।

आँचलिक उपन्यास में पात्रों की भरमार होती है। समाज बिखरा हुआ मिलता है। हर एक पात्र अपना अपना सत्ता महत्त्व रखता है। जोशी जी ने इसमें नायक, नायिका, खलनायक, सच्चाई का साथ देनेवाले तथा सामाजिक कुप्रथाओं के विरूद्ध विद्रोह करनेवाले और संतान हेतु बहु विवाह करनेवाले पात्रों का जिक्र किया है। ये पात्र आँचलिक जीवन में व्याप्त प्रवृत्तियों एवं विषमताओं का उद्घाटन करने में सहायक

बने हैं। अपनी-अपनी अलग-अलग विशेषताओं के साथ-साथ वे रूढ़ि परंपरा के द्योतक लगते हैं। भाषा की दृष्टि से यह उपन्यास सफल है। इस उपन्यास में जोशी जी ने स्थानीय बोली का अधिक मात्रा में प्रयोग किया है जिसमें आँचलिक शब्द, 'कर' प्रत्यय लगाकर आये शब्द, जुड़े शब्द तथा द्विरूक्ति शब्दों की भरमार है। आँचलिक जीवन का चित्रण वैशिष्ट्यपूर्ण बनाने के लिए सजग भाषा का प्रयोग किया है। इसी कारण उपन्यास की आँचलिकता उजागर हो पाने में भाषा की मदद हो चुकी है। आँचलिक शब्दों के साथ-साथ उस समाज में प्रचलित मुहावरें, कहावतें तथा लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया है जिससे उसका वर्णन हू-ब-हू लगता है। कथानक की वर्णनात्मकता का खण्डन करने के लिए तथा कथानक में रोचकता लाने के लिए छोटे-छोटे संवादों को भी सम्मिलित किया है। पात्रानुकूल तथा भावानुकूल संवाद पात्रों के गुणों का उद्घाटन करने के लिए उपयुक्त रहे हैं।

कथानक का सौंदर्य बढ़ाने के लिए प्रकृति के काव्यात्मक वर्णन के साथ-साथ अपशब्दों का भी प्रयोग किया है। 'कनाली' गाँव के वातावरण से संबंधित समाज की पृष्ठभूमियों का भी वर्णन किया है जो उस अंचल के युगजीवन के हर एक पहलू को प्रस्तुत कर देती है। इन पृष्ठभूमियों के अंतर्गत राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि को दर्शाया है। राजनीतिक पृष्ठभूमि में सरकार द्वारा मिलनेवाली योजनाएँ तथा मदद बीच में ही सरकारी अफ़सर हड़प लेने की बात पर व्यंग्य किया है। इसके साथ-साथ गाँव के पंचायत के पंचों की धोकेबाजी का वर्णन किया है। सामाजिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत उस प्रदेश के वर्ग, जाति भावना, पर्व, उत्सव, त्यौहार एवं समस्याओं का चित्रण किया है।

हिमांशु जोशी जी ने 'कनाली' गाँव के अंचल का वर्णन किया है जिसमें अज्ञानी और अशिक्षा के कारण वहाँ के लोग पूरे अंधश्रद्ध दिखाई देते हैं। इनमें धर्म के प्रति विश्वास, बहुदेववाद, धार्मिक भावना का ऱ्हास, परंपराप्रिय समाज, अंधविश्वास दिखाई देता है। जिसे जोशी जी ने इस उपन्यास के माध्यम से सार्थ रूप में प्रकट किया है। इन पहाड़ी प्रदेश के लोगों के जीवन को अर्थाभाव सता रहा दिखाई देता है। सरकारी अफसर तथा सेठ साहुकारों द्वारा होनेवाले शोषण के कारण उनकी स्थिति अधिक ही दयनीय लगती है। इस आर्थिक विपन्नावस्था का करूण दृश्य जोशी जी उपस्थित करते हैं। परंपरा, रीति आदि का पालन करनेवाला समाज तथा आर्थिक विपन्नावस्था होने पर भी वहाँ के मेलों में, त्यौहारों में उत्सुकता से हिस्सा लेने का सफलतापूर्वक वर्णन किया है। लोकसंस्कृति के अनेकानेक रूपों को चित्रित किया है। पहाड़ी अंचल के

लोकसंस्कृति का प्रभावी चित्रण 'अरण्य' उपन्यास में मिलता है। 'अरण्य' उपन्यास में अधिक मात्रा में नारी विषयक समस्याओं का चित्रण मिलता है। जिसमें प्रमुख विवाह समस्या है। इसमें विधवा विवाह, अनमेल विवाह, अंतर्जातीय विवाह, दहेज समस्या, बहुविवाह आदि विवाह प्रकारों के माध्यम से स्त्री पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार, व्यसनाधीनता तथा पारिवारिक संघर्षों को भी चित्रित किया है। इनमें से कई समस्याएँ ऐसी भी है, जिनका अभी तक कोई समाधान निकल नहीं आया है। इन समस्याओं का यथार्थ रूप जो अधिकतर ग्रामांचल में दिखाई देता है उसे जोशी जी ने सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार 'अरण्य' उपन्यास आँचलिक उपन्यास के तत्त्वों पर खरा उतरता है।

संदर्भ संकेत

(1) डॉ.मृत्युंजय उपाध्याय - हिंदी के आँचलिक उपन्यास - पृ.63

(2) सहदेव एच्. कांबळे - फणिश्वरनाथ रेणु की कहानियों में आँचलिकता - पृ.31

(3) डॉ.मृत्युंजय उपाध्याय - हिंदी के आँचलिक उपन्यास - पृ. 49

(4) डॉ.इंदिरा जोशी - हिंदी के आँचलिक उपन्यास उद्भव और विकास - पृ.144

(5) डॉ.राजनाथ शर्मा - साहित्यिक निबंध - पृ.920

(6) डॉ.हरिशंकर दुबे - फणिश्वरनाथ रेणु : व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ.142

(7) हिमांशु जोशी - अरण्य - पृ.6

(8) वही , पृ.17

(9) वही , पृ.84

(10) डॉ.श्रीनारायण अग्निहोत्री - उपन्यास तत्त्व एवं रूपविधान - पृ.134

(11) हिमांशु जोशी - अरण्य - पृ.70

(12) वही , पृ.52,53

(13) वही , पृ.71

(14) वही , पृ.103

(15) वही , पृ.110

(16) वही , पृ.46

(17) वही , पृ.116

(18) वही , पृ.76

(19) वही , पृ.76,77

(20) वही , पृ.112

(21) वही , पृ.47

(22) वही , पृ.58

(23) वही , पृ.84

(24) वही , पृ.116

(25) वही , पृ.117

(26) वही , पृ.87

(27) वही ,पृ.60

(28) वही , पृ.69

(29) वही , पृ.92

(30) वही , पृ.115

(31) वही , पृ.82

(32) वही , पृ.92

(33) वही , पृ.21,22

(34) वही , पृ.12

(35) वही , पृ.102

****